RE: ANOMALIES IN C.B.S.E. CLASS XII PHYSICS PAPER

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, कुछ दिन पहले बल्कि कई वर्षों से एक चर्चा चली आ रही है कि दिन पर दिन हमारे स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों पर पढ़ने के बस्ते का बोझ बढ़ता जा रहा है और इतना दबाव बच्चों पर है, नर्सरी से बारहवीं क्लास तक के बच्चों पर इतना दबाव है कि किताब को छोड़कर न वह बाएं देख सकते हैं और न दाएं देख सकते हैं।

श्री सतीश अग्रवाल (राजस्थान): एयर प्लेन में लिमिट है, पर यहां नहीं है।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: महोदय, दुर्भाग्यपूर्ण बात तो उस समय शुरू होती है जब बच्चे इम्तिहान में पहुंचते हैं। तब उन्हें महसूस होता है कि वहां किस तरह से गैर-जिम्मेदाराना काम करते हुए जो पेपर सैटर होते हैं, चाहे मोडेशन बोर्ड है, चाहे सबजेक्ट कमेटी है, वह किस तरह का पेपर बच्चों के लिए सैट हो, इस पर ध्यान नहीं देते। सी॰बी॰एस॰सी॰ के इम्तिहान में हिन्दुस्तान के लाखों बच्चे इम्तिहान दे रहे हैं और पांच मार्च को फिजिक्स के पेपर में क्या देखा गया कि कई सवाल ऐसे थे, अब तीन टाइप के पेपर सैट बने हैं, क्वेश्चयन पेपर सैट नम्बर — एक, दो और तीन। इस तरह तीन तरह के पेपर सैट किये जाते हैं। जब आप यूनीफार्म ऐजूकेशन की बात करते हैं तो आप यूनीफार्म क्वैश्चयन पेपर की बात क्यों नहीं करते? तीन तरह के पेपर सैट में आप कौन सा पैरामीटर रखते हैं जिससे यह पता चल सके कि छात्र मेधावी है या नहीं?

महोदय, इन चीजों का तो विरोध हो ही रहा था, लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। डिबेट, सिम्पोज़ियम चल रहे हैं और सेमीनार हो रहे हैं। इसी बीच यह जो 12वीं कक्षा का फिजिक्स का पेपर है सीबीएससी के एक्जाम का यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। उस दिन सारे केन्द्रों में कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर तक और कच्छ से लेकर कोहिमा तक जहां-जहां सीबीएससी का कोर्स है, हर जगह पर छात्रों ने अपने मन की गुहार निकाली है। महोदय, छात्रों की बात तो छोड़िए फिजिक्स के शिक्षकों ने अपने नाम डरते हुए बताने से इन्कार किया परन्तु उन्होंने कहा कि अगर ये सवाल हमें दे दिए होते तो शायद हम भी इन सवालों को साल्व नहीं कर सकते हैं। जब पढ़ाने वाले शिक्षक कह रहे है कि हम पेपर को साल्व नहीं कर सकते हैं तो छात्र कैसे साल्व कर सकते हैं। महोदय, यह कंपीटीशन का जमाना है और आज सभी कालेजों में एडमिशन परसंटेज के आधार पर होते हैं और परसंटेज के बगैर कहीं एडमिशन नहीं होता है। एक बच्चे की मां रोते-रोते गुहार करती है, जिसको हिन्दुस्तान टाइम्स ने कोट किया है, कि मेरा बच्चा बिरला टेक्नीकल इंस्टीट्यूट में भर्ती होने के लिए 95 परसेंट से ऊपर नम्बर लाने की कोशिश में इम्तहान में बैठा था और अगर उसका यह फिजिक्स का पेपर खराब न होता तो शायद उसके 95 परसेंट से ऊपर नम्बर आते परन्तु अब उसके 95 परसेंट से कम नम्बर आयेंगे। एक सब्जेक्ट के कारण उसका परसंटेज गिर जायेगा। महोदय, इसका ख्याल कौन रखेगा? उस पर अंकुश कौन लगायेगा? इसको कौन मानीटर करेगा? जो सीबीएससी के अधिकारी गण हैं वह चुपचाप कान में तेल डाले, आंखों में रंगीन चश्मा पहने चुपचाप बैठे हैं और इस पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। मेरी आपके माध्यम से सरकार से मांग है कि वह सीबीएससी के अधिकारियों को बुलाकर उनसे बात करे। इसमें ग्रेस मार्क्स देने से हो सकता है कि छात्रों के मैधावीपन का, उनकी एजुकेशनल क्वालिफिकेशन का, उनकी इंटेलीजेंसी का पता न लगे क्योंकि सबको बराबर ग्रेस मार्क्स दिए जायेंगे। मेरा निवेदन है कि फिजिक्स के पेपर का रि-एक्जामिनेशन करा दिया जाये जिससे हम उनको जस्टिस दे सकें। महोदय, लाखों लोगों का भविष्य इस पर टिका हुआ है। जो नौजवान बच्चे हैं, जो इंटेलीजेंट बच्चे हैं अगर उनको इस तरह से मजबूर करके फेल करते हैं तो ये बच्चे निराश हो कर के सुसाईड करते हैं। जैसा कि आपने अखबारों में भी पढ़ा है कि 10वीं क्लास के बच्चों ने या 12वीं क्लास के बच्चों ने पेपर को देकर के और फेल हो जाने पर सुसाईड किया है। दिल्ली के बच्चों के बारे में दिल्ली के अखबारों में भी छपा है। सारे भारत में कई छात्रों में फ्रस्ट्रेशन है, उनकी लाइफ की कोई सैक्योरटी नहीं है और एजुकेशन में भी जब वह पढ़ लिखकर एक्जामिनेशन में अपना पेपर देखता है तो वह पाता है कि It is beyond the syllabus. It is beyond their capacity. Even the teachers are not able to solve the questions. तो उनके बारे में तुरन्त कार्रवाई करने की जरूरत है। यह मेरी मांग है।

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Mr. Vice-Chairman, Sir, there was a news item in the newspapers about the question paper of Physics for the 12th Class which was held on the 5th March. The Physics Teachers Association of the Southern region assessed this question paper. They came to the

conclusion that one, the question paper was out of the syllabus, two, questions were vague and three, there were questions which could not be solved. They have come to these three conclusions. Sir, after reading this news, I talked to some boys. They told me that out of 100 marks, 30 marks are for practical and 70 marks are for written examinations. They also said that they would not be able to get more than 40 marks. Even the most intelligent boy who appeared in the examination, would not be able to get more than 40 marks. In the Southern States, if boys and girls get 97 to 98 per cent marks, then only they are admitted to professional courses; otherwise, they are not able to get admission even in colleges. The CBSE has set this question paper recklessly. Lakhs of boys and girls have been affected. The hon. Human resource Development Minister is here. He must give an assurance to this House that grace marks would be given to the students for the lapse on the part of the concerned authorities in setting up the question papers ...(*interruptions*)...

श्रीमती रेणुका चौधरी (आन्ध्र प्रदेश): री-एग्जाम के लिए बोलिये। ....(व्यवधान)...

SHRI V. NARAYANASAMY: Let the Government decide whether they want to give grace marks or whether they want to hold a fresh examination.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Sir, I associate myself with this. I also want to place on record a few things. We are supposed to deal with a family as a unit. There is increasing stress laid on performance.

As a result, the pressure on improving the performance has increased. Gross injustice has been done to the students. Children are driven to commit suicide. I am deeply concerned if we as Government contribute to this terrifying factor. We must set this right. I join my colleagues and I am sure everybody across this House would join me on this issue. We are concerned about the welfare of our children. These students are the citizens of tomorrow. If injustice has been done, we should not hesitate to set it right. Re-examination must be held. Otherwise, you will not be able to judge who can compete and who cannot compete.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P.K. JOGI): I am sure everyone, cutting across party lines would like to associate himself ...(*interruptions*)...

SHRI SATISH AGARWAL: इसी सब्जेक्ट पर ...(व्यवधान) Mr. Vice-Chairman. I was carrying the cuttings of all these newspapers everyday. For the last three days I have been doing it. I did this because, my grandson appeared in this examination. I hesitated in bringing this up during the Zero Hour because I thought somebody would say that I was mentioning it because my grandson was involved. But I read about it in all the newspapers, be it from the South, or the North, or the East or the West. When I went home, Tinu, my grandson, was looking very sad. I asked him why he was sad. He told me that something had gone wrong with the papers. I asked his tutor also about this. Even he said the same thing. I then thought that this was a serious matter not because it concerned my gradson, but because it concerned all the children. But I still hesitated in bringing it up here. Fortunately, Mr. Ahluwalia raised this matter today on the floor of the House. Whatever he said is 100 per cent correct. I had a talk with the tutor also. What Renukaji said, you will find it happenning all over the country once the results are out. Students will commit suicide if this mistake is not rectified. I associate myself with Mr. Ahluwalia and demand that re-examination be held.

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): पूरा हाउस उस पर सहमत है?

SHRI M.A. BABY (Kerala): Mr. Vice-Chairman, Sir I seek your indulgence. I am on a different point. I would have been happy if issues were raised here and then they got printed in the newspapers. I would like to know the response of the Government. An issue was raised here two, three days ago by my hon. colleague and nothing has happened so far. I have my doubts. The other day, the Prime Minister had given an assurance on the floor of the House. It was regarding the failure of the I&B Ministry in covering the birth centenary of Krishna Menon. He said that the I&B Minister would make a statement here. So far no statement has been made. This is the case after an assurance was given by the Prime Minister. We raise our voice on various issues. But is there any guarantee that the Government will do something about it?

SHRI S.S. AHLUWALIA: The Minister is sitting here. Let him respond...(*interruptions*)...

SHRI V. NARAYANASAMY: The Government should assure the House ...(*interruptions*)... Is the Government sleeping? ...(*interruptions*)...

श्री राघव जी: उसमें 30 प्रश्न पूछे गये थे। ...(**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... यह बात बहुत गंभीरता से कह दी गई है...(**व्यवधान**)...अहलुवालिया जी बैठ जाइए। आप मुझे बोलने दीजिए।...(**व्यवधान**)...

SHRI SATISH AGARWAL: Please ask the Minister concerned.

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: आप भी इस पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर कर दें तो बेहतर होगा। ...(**व्यवधान**)...

आप सरकार को डाइरेक्शन दें। (*Interruptions*) Let him give his response. (*Interruptions*)

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): आप मुझे बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: चेयर से भी बात आ जाए तो यह ज्यादा बेहतर है।

...(**व्यवधान**)...

†[مولانا عبید اللہ خان اعظمی: چیئر سے بھی بات آجائے تو یہ زیادہ بہتر ہے۔ ..."مداخلت"...]

SHRI K. RAHMAN KHAN: The Education Minister is here. (*Interruptions*)

SHRI M.A. BABY: Everyday we are raising issues and Government is not responding.

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): यह बड़ा गंभीर प्रकरण है। मैं चाहूंगा... Mr. Baby, please sit down. Mr. Minister, do you want to speak?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI MUHI RAM SAIKIA): Sir, I have heard with rapt attention the concern expressed by the Members of this House. I have taken note of it. Let me consider about the matter. After consideration, Government will express its concern.

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: सर, यह एक ऐसा मसला है जिस के लिए वेट नहीं किया जा सकता है। Tommorow will be too late for this because these students have to sit in competitive examinations. They have to appear in competitive exaiminations. With a bleak future, how can they sit in the examinations?

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (Delhi): Consideration is not enough. He must take some action on this. Consideration is not enough.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AJIT P.K. JOGI): Please sit down.

आप बैठ जाईए। आप उनको बोलने दीजिए। काप्से जी आप बोलिए।

---

†[ ]Transliteration in Arabic Script